भाष्करनगर सार्वजनिन दुर्गा पुजा समिति के दुर्गा पूजा कार्यक्रम में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक 20 अक्टूबर 2023, शुक्रवार	समय : 5.00 PM	स्थान : भाष्करनगर, गुवाहाटी

- भाष्करनगर उन्नयन समिति के अध्यक्ष श्री ब्रजेश भट्टाचारजी,
- महासचिव श्री संदीप मजुमदार जी
- भाष्करनगर सार्वजनिन दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष श्री सुब्रत देवनाथ जी
- सचिव श्री कृष्ण मंडल
- पूजा समिति के सम्मानित सदस्यगण
- उपस्थित देवियों और सज्जनों !

नमस्कार!

सबसे पहले, आप सभी को दुर्गा पूजा की बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएँ। दुर्गोत्सव के पावन अवसर पर आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे इस कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए भाष्करनगर उन्नयन समिति और दुर्गा पूजा समिति को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यह दुर्गा पूजा समिति पिछले 54 वर्षों से श्रद्धा और भक्तिभाव से दुर्गा पूजा का आयोजन कर रही है। मैं समिति को भविष्य के आयोजनों के लिए भी शुभकामनाएं देता हूं।

देवियों और सज्जनों,

हमारा भारतवर्ष पर्वों का देश है, इसीलिए व्रत, तीज-त्योहार और धार्मिक अनुष्ठान प्रत्येक वर्ष हर्षोल्लास व श्रद्धापूर्वक मनाये जाते हैं। व्रत- उपवास हमें संतुलित और संयमित जीवन जीने के लिए तन को स्फूर्त और मन को सशक्त करते हैं। साथ ही सही मायने में मानवता का पाठ भी पढ़ाते हैं।

भारतीय जनमानस में व्यापक चेतना जागृत करने, सामाजिक एकीकरण, राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुदृढ़ बनाने तथा सामाजिक संबंधों की समरसता को जीवंत बनाए रखने में त्योहारों की अहम भूमिका रही है। उमंग और उल्लास से सराबोर हमारी उत्सव प्रियता, अनुष्ठानिक कार्यों में रुचि और परंपराओं को सहेज कर रखने की निष्ठा ने ही भारतीय संस्कृति के सुनहरे मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया है। यह गतिशीलता ही भारतीय संस्कृति को कालजयी बना देती है।

दुर्गा पूजा हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण और प्रमुख त्योहार है। यह आध्यात्मिकता, सामाजिकता और सांस्कृतिकता का महान उत्सव है। इस उत्सव पर हम महिषासुर मर्दिनि मां दूर्गा की भक्तिभाव से पूजा और आराधना करते हैं।

दुर्गा पूजा त्योहार से कहीं अधिक है। यह भक्तों में अध्यात्म की नवीन ऊर्जा का संचार करता है। दुर्गोत्सव सच्चे मन और श्रद्धा से देवी दुर्गा की अराधना करने वाले मनुष्य के मन व बुद्धि को संसार की दौड़ में से लौट कर स्वयं में खोने का सुअवसर प्रदान करता है।

यह एक ऐसा उत्सव है, जो जाति, धर्म, ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाकर हम सभी को एकजुट होने की प्रेरणा देता है। लोगों में एकता एवं भाईचारा की भावना पैदा करता है। पूजा समितियां इसका अनुपम उदाहरण है। पूजा समिति में शामिल सभी सदस्य एकजुट होकर दूर्गा पूजा के सफल आयोजन के लिए अपने सामर्थ्य के साथ काम करते हैं। वास्तव में यह हमें टीम वर्क का गुण सिखाती है।

दुर्गा पूजा बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। यह त्योहार हमें नैतिकता, भलाई और सदाचार के रास्ते पर चलने की प्रेरणा भी देता है।

दुर्गा पूजा केवल एक धार्मिक त्योहार ही नहीं, बल्कि कला और संस्कृति का उत्सव भी है। यह त्योहार कलाकारों को अपनी रचनात्मक कला के प्रदर्शन का भी अवसर प्रदान करते हैं। मूर्तिकार देवी दुर्गा की सुंदर मूर्तियाँ महीनों की कड़ी मेहनत और समर्पण के साथ बनाते हैं।

पंडालों में और उसके आस-पास सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे संगीत, नृत्य प्रदर्शन, नाटक और सस्वर पाठ आयोजित किए जाते हैं। उत्साह और आनंद से भरे इस त्योहार के दौरान ढाक की ध्वनि, फूलों की महक और देवी की सुंदर मूर्तियों के दर्शन से हमारे दिलों में शांति और खुशी का एहसास होता है।

भारतीय संस्कृति में दुर्गा पूजा अर्थात शक्ति की आराधना का विशिष्ट महत्व है। यह सिर्फ दुर्गा मां की ही पूजा नहीं, बल्कि स्त्री की ताक़त, सामर्थ्य और उसके स्वाभिमान की एक सार्वजनिक 'पूजा' है।

नवरात्र महोत्सव आसुरी शक्तियों पर देवी शक्ति की विजय का मंगल गान है। देवी दुर्गा की उपासना से साधक का व्यक्तित्व सबल, सशक्त, निर्मल और उज्जवल हो उठता है। उसे अलौकिक परम आनंद की अनुभूति कराती है।

मां दुर्गा के नौ रूपों से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि एक स्त्री के अनेक रूप हैं। वह सहज है, तो कठोर भी है, सुंदर है, तो कुरूप भी है, सहनशील है, तो क्रोधी भी है। उसको कमतर आंकने की भूल नहीं करना चाहिए। हमें नारी को देवी स्वरूपा मान उसका सम्मान करना चाहिए।

नवरात्रि पर कन्या पूजन का विधान भी यही संदेश देता है कि हमें बेटियों का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वे सर्वगुणसंपन्न, सर्वशक्तिमान हैं। सरल शब्दों में कहें, तो हमें 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का संकल्प लेना चाहिए, यही सही मायने में मां दुर्गा की पूजा है।

आज हमारे राजनीतिक और सामाजिक जीवन में महिषासुरी शक्तियाँ दिन-प्रतिदिन हिंसक और खूँखार प्रवृत्तियों का रूप धारण कर चुकी हैं। समाज में रोज दुर्गाओं का दहन हो रहा है। यह सिर्फ़ इसलिए हो रहा है कि हमारे समाज में दुर्गा का आदर नहीं है। उसकी वास्तविक शक्ति का हमें आभास नहीं है।

आइए, इस पावन अवसर पर, हम एक ऐसे समाज के निर्माण का संकल्प लें, जहां महिलाओं को पहले से अधिक सम्मान मिले एवं राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में उनकी बराबर की भागीदारी सुनिश्चित हो।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भाष्करनगर सार्वजनिन दुर्गा पूजा समिति बिहू, रवींद्र जयंती, स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर भी कार्यक्रमों का आयोजन करती है। इसके अलावा स्वास्थ्य शिविर, पौधरोपण, स्वच्छता अभियान और समाज सेवा के अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है।

इसके अलावा महान अहोम राजवंश के गौरवमयी इतिहास और वीर लाचित बरफुकन की देशभक्ति की भावना के प्रति युवाओं को जागरूक करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करना समिति का प्रसंसनीय कदम है। मैं समिति को तथा इस प्रतियोगिता में योगदान देने के लिए असम की भारतीय इतिहास संकलन समिति को धन्यवाद देता हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि समिति भविष्य में ऐसे सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन कर समाज में सोहार्द और भाईचारा को बढ़ावा देती रहेगी। मैं एक बार फिर समिति को उनके भविष्य के कार्यक्रमों की सफलता के लिए हृदय तल से शुभकामनाएं देता हूं।

मैं इस शुभ अवसर पर, "मां दुर्गा" से प्रार्थना करता हूँ कि यह खुशी का त्योहार हम सबके जीवन में सुख, सौभाग्य और समृद्धि लेकर आए और देशवासियों के बीच शांति, भाईचारे और एकता की भावना और सशक्त हो।

धन्यवाद !

जय हिंद !